"हमारा लक्ष्य, हमारा ध्येय"

हमारा लक्ष्य क्या है, हम कैसे भारत की परिकल्पना करते हैं । हम किस तरह का समाज चाहते हैं । विश्व मे भारत की क्या स्थिति हो । हमारा प्रभाव क्षेत्र क्या हो । क्या हमारे विचार अपने लक्ष्यों के बारे मे स्पष्ट हैं । क्या हम इन लक्ष्यों को ध्यान मे रख कर आगे का कार्यक्रम बना रहे हैं । इन सब सवालों के जवाब हमे स्पष्ट होने चाहिए । प्रस्तुत है, मेरे विचार कुछ वांछनीय लक्ष्यों के लिये ।

निर्मल भारत : मुझे अपने व्यवसाय के सिलसिले मे अकसर विदेश जाना पडता हैं । बहुत बार मेरे संबंधी और मित्र, जिन्हे कभी विदेश जाने का अवसर नहीं मिला है, यह पूछते हैं कि यहाँ और बाहर के देशों मे क्या फर्क दिखता है । मुझे एक ही फर्क सबसे ज्यादा नजर आता है और वह है, गंदगी का । और देशो मे हमारे जैसी गंदगी कही देखने को नहीं मिलती । शायद हम विश्व के सबसे अधिक गंदे देश हैं । विश्व के किसी भी देश मे मैने सड़क के किनारे या रेलवे लाइन के किनारे लोटा लिये बैठे किसी को नहीं देखा । हम शायद विश्व मे हम ऐसी अकेली कौम हैं जो अपने पूजा के स्थलों को, तीर्थो और मंदिरों को भी गंदा रखती है ।

हमारा पहला लक्ष्य अपने को सभ्य समाज कहलाने के लायक बनना होना चाहिये और एसा हम अपने शहरों, गावों आदि को औरों जैसा ही साफ सुथरा और व्यवस्थित बना कर ही कर सकते हैं ।

इस लक्ष्य को पाने के लिये किसी विशेष तकनीकी जानकारी या किसी बहुत बड़ी पूँजी की जरूरत भी नही पड़ती । सिर्फ व्यवस्था मे सुधार और उपलब्ध साधनो के उचित इस्तेमाल से ही इस लक्ष्य को पाया जा सकता है । लंदन मे सफाई कर्मचारी दिल्ली से ज्यादा नही, लेकिन लंदन मे हम चांदनी चौक जैसी गंदी सड़क ढूढ ही नही सकते ।

सुशिक्षित भारत : – हमारा दूसरा लक्ष्य अपने भविष्य को समृद्ध एवं सशक्त बनाने के लिये, अपने प्रमुख संपत्ति मानव संपत्ति, को उपयोगी एवं मूल्यवान बनाने का होना चाहिये । मानव संसाधन, यदि वह उपयोगी और सशक्त हो तो सभी दूसरे लक्ष्यों की प्राप्ति मे सहायक हो सकती है । हम अगली पीढी को जन्मजात विषमताओं से तो दूर नही कर सकते परंतु उनको उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसर देकर इस विषमता को कम अवश्य कर सकते हैं । अभी कुछ दिनो पहले मसूरी मे मेरी मुलाकात दो भाईयों और बडे भाई की पत्नी से हुई । बड़ा भाई सेना मे केप्टेन था, उसकी पत्नी, अखिल भारतीय प्रशासनिक संस्थान मे, प्रशासनिक अधिकारियों को, मेनेजमेन्ट की विशेष ट्रेनिंग देती

थी और छोटा भाई एम डी की पढ़ाई कर रहा था । बात करने से पता चला कि वे तीनों छोटे किसानों के परिवार से थे और केन्द्रीय सरकार के अन्योदय विद्यालय से उन्होने शिक्षा प्राप्त की थी । अच्छी स्कूल स्तर की शिक्षा ने उनको इतना समर्थ बना दिया था कि नितांत गरीब परिवार से होने के बावजूद ऐसे स्तर तक पहुँच सकें ।

हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि भारत के हर बच्चे को स्कूल मे कम से कम अन्त्योदय स्कूलों के स्तर की, या दिल्ली पब्लिक स्कूल जैसे अच्छे पब्लिक स्कूल के स्तर की शिक्षा दे सकें । यदि स्कूलों मे बुनियादी शिक्षा अच्छी होगी तो हमारे बच्चे आगे अपना रास्ता खुद बनाने मे समर्थ होंगे । किसी भी जाति, धर्म या वर्ग के बच्चों को आगे बढ़ने के लिये कालेज की पढ़ाई मे या नौकरी के लिए किसी प्रकार के आरक्षण की जरूरत नही पडेगी । उसके पैर इतने मजबूत होंगे कि वह अपने बल पर जीवन की उँचाइयों को पा सकें । उसे आरक्षण के बैसाखी की जरूरत नहीं रहेगी ।

स्कूल के बाद विश्वविद्यालय के स्तर की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य, संशोधन और विशेष ज्ञान देने के लिये होना चाहिये । यदि स्कूल के विद्यार्थी का ज्ञान समुचित स्तर का हो जाता है, तो ८० प्रतिशत नौकरियों की जरूरत स्कूल पास छात्र ही, एक या दो वर्ष की ट्रेनिन्ग के बाद पूरी कर सकेंगे । विश्वविद्यालय का उद्देश्य, ज्ञान मे बढोत्तरी करना होगा । और उनका मूल्यांकन भी उनके द्वारा किये जा रहे शोध और उसकी गुणवत्ता के अनुसार होना चाहिए । हमारा लक्ष्य होना चाहिए के विश्व के कम से कम २५% शोध पत्र हमारे विश्वविद्यालयों से निकलने चाहिए । और २५% पेटेन्ट भारतीय विश्वविद्यालयों और संस्थानो द्वारा दाखिल किए जाएँ ।

संपन्न भारत :- किसी भी देश की संपन्नता उस देश द्वारा किए गये प्रतिव्यक्ति उत्पादन पर निर्भर करती है । उत्पादन चाहे उद्योग, कृषि या सेवा, किसी भी क्षेत्र मे हो । आज प्रति व्यक्ति उत्पादन मे हमारा देश और देशों की तुलना मे १३९ वें स्थान पर है । जन संख्या के अनुसार आज हम विश्व मे दूसरे स्थान पर हैं और क्षेत्र फल के अनुसार आठवें स्थान पर । यदि हम प्रतिव्यक्ति उत्पादन मे भी दूसरे स्थान पर आ जाऐ तो भारत का कुल वार्षिक उत्पादन ९० हजार अरब डालर का होगा और हम विश्व के सबसे धनी देश होंगे । (अमेरिका का कुल वार्षिक उत्पादन लगभग १४ हजार अरब डालर है ।) यदि हम प्रतिव्यक्ति उत्पादन मे दसवें नंबर पर भी आ जाए तो देश का संपूर्ण उत्पादन लगभग ४३००० अरब डालर होगा, और फिर भी हम विश्व के सबसे धनी देश होंगे । किसी भी देश या समाज के लिये संपन्नता का लाना जरुरी है । संपन्नता लाने के लिये उत्पादन का बढाना जरुरी है । उत्पादन ही हमे साधन देते हैं जिससे हम सामाजिक, वैज्ञानिक, आर्थिक और सामरिक कार्यक्रम चला सके और विश्व मे अपनी वांछित स्थिति तक पहुँच सकें ।

हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि हम प्रति व्यक्ति उत्पादन मे, विश्व मे कम से कम पहले दस देशों मे आ जाएँ । ऐसे मे भारत का सफल उत्पादन लगभग ४३ हजार अरब डालर (रुपये २५८० हजार अरब) का होगा । यदि सकल उत्पादन का १०% भी कर के रुप मे शासन द्वारा इकट्ठा करें तो दो

करोड ५८ लाख करोड की विशाल राशि हमारे व्यवस्था चलाने के लिए और निर्मल भारत और सुशिक्षित भारत के कार्यक्रमो के लिये उपलब्ध होगा । आज भारत की संपूर्ण कर राशि लगभग ६ लाख करोड़ की है ।

सशक्त भारत – हमारे यहाँ हिन्दुओं मे जब कोई धार्मिक कार्यक्रम होता है तो स्थान, जहाँ भी यह कार्यक्रम हो रहा हो, का वर्णन "जंबूद्वीपे, भरत खण्डे, आर्यावर्ते" के रुप मे किया जाता है । जंबूद्वीप, अदन से लेकर सिन्गापुर तक के बीच का भूभाग है । सउदी प्रायद्वीप, ईरान, ईराक, से लेकर दक्षिण पूर्व एशिया तक के सभी देश जम्बूद्वीप मे आ जाते हैं । भरत खण्ड भारत, पाकिस्तान श्रीलंका, नेपाल, भूटान और बर्मा का भूभाग है । आर्यावर्त को हम आज का भारत मान सकते हैं ।

हमारी शक्ति और प्रभाव इतना होना चाहिए कि शासन भले ही हमारा आर्यावर्त तक ही सीमित हो, पूरे भरत खण्ड, यानी पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बन्ग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका और बर्मा मे सुरक्षा और विदेश नीति का निर्धारण भारत ही करे । लगभग आज भूटान के तर्ज पर । यदि बाहर के किसी देश (जैसे चीन या अमेरिका) को इस पूरे भूभाग मे कोई सुविधा चाहिए तो उसे दिल्ली से ही बात करनी पड़े इस्लामाबाद, काबुल या ढाका से नहीं । दिल्ली ही इस्लामाबाद, काबुल या ढाका से मंत्रणा कर कर निर्णय लेने का अधिकारी होगा । इसी प्रकार पूरे जंबूद्वीप मे, अर्थात अदन से सिन्गापुर तक, बाहरी किसी भी देश द्वारा, कोई भी करार हमारी सहमति के बिना नही हो सकता । इस पूरे भूभाग मे किसी भी महत्वपूर्ण बदलाव मे हमारी सहमति अनिवार्य होनी चाहिए ।

वास्तव मे, यदि हम अपने पहले तीन लक्ष्यों को पा लें तो चौथा अपने आप हो जायेगा । यदि हमारे गाँव, नगर और समाज जापान, चीन, यूरोप या अमेरिका जैसे स्वच्छ और व्यवस्थित हो जाँय, हमारे सभी युवाओं की शिक्षा और विचार का स्तर हावर्ड या पेकिन्ग विश्वविद्यालयों के स्नातकों के स्तर का हो जाय, हमारी प्रतिव्यक्ति उत्पादकता लगभग ४०,००० डालर की हो जाय, तो हम बिना किसी विशेष प्रयत्न या विरोध के पूरे जंबूद्वीप मे प्रभाव पा लेंगे । पूर्वी जर्मनी और पश्चिमी जर्मनी का एकीकरण किसी सेना द्वारा नहीं किया गया, पश्चिमी जर्मनी की संपन्नता ने पूर्वी जर्मनी वालों को एकीकरण के लिए मजबूर कर दिया और बिना कोई गोली चले, एक बूंद भी खून बहे बिना, दो बडे राष्ट्र, जो दशकों से एक दूसरे के कट्टर दुश्मन थे, एक हो गये ।